VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

JANUBIY OSIYO MAMLAKATLARI TILShUNOSLIGINING DOLZARB MUAMMOLARI, JANUBIY OSIYO TILLARINI QIYOSIY-TIPOLOGIK O‘RGANISHNING BUGUNGI KUN MUAMMOLARI

दक्षिण एशियाई बहुभाषिकता और लुप्तप्राय भाषाएँ : गोंड भाषा की वेदना के विशेष संदर्भ में

https://doi.org/10.5281/zenodo.7388932

डॉ॰ अमित रत्न द्विवेदी*
प्रो॰ गोपाल कृष्ण ठाकुर**

प्रस्तावना

अपनी अद्भुत भाषाई विविधता और सदियों के प्रवास, आक्रमण और सांस्कृतिक समावेश के कारण भाषा संपर्क की स्थिति के साथ, दक्षिण एशिया भाषाविदों के लिए एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है। अपने कौशल का प्रयोग करने, स्थापित सैद्धांतिक भाषाई दावों को चुनौती देने के लिए वर्तमान में भाषा का संरक्षित होना जरूरी है। एशियाई भाषाओं ने अपनी अनूठी भाषाई विशेषताओं के साथ, प्रचलित औपचारिक भाषाई सिद्धांतों के लिए दिलचस्प चुनौतियां पेश की हैं और अपने क्षितिज का विस्तार करने और अपनी सैद्धांतिक धारणाओं को संशोधित करने की आवश्यकता पर बल दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में भाषा की स्थिति को दर्शाते हुए भारत में गोंड जनजाति के विषय में भाषा के पैराडाइम में हुए परिवर्तन के पीछे के करण को बताया गया है।

मुख्य शब्द: भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विलुप्ति, भाषाई मृत्यु, संकटग्रस्त भाषा, भाषा का स्वरूप

भाषाओं की वर्तमान स्थिति

वस्तुतः लुप्तप्राय भाषा एक ऐसी भाषा है जिसके अनुपयोग से बाहर होने का खतरा है और इसके वक्ता इसे अगली पीढ़ी को नहीं दे पाते हैं। एक भाषा को संकटग्रस्त तब माना जाता है जब उसके बोलने वालों की आबादी कम हो रही हो और पिछली पीढ़ी सक्रिय रूप से या यहां तक कि भाषा के उपयोग का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं करती हो। यह कहते हुए कि "भाषा विविधता मानव विरासत के लिए आवश्यक है", लुप्तप्राय भाषाओं पर यूनेस्को का तदर्थ विशेषज्ञ समूह (2003) लुप्तप्राय भाषा की यह परिभाषा प्रदान करता है, "जब किसी भाषा विशेष के वक्ता इसका उपयोग करना बंद कर दें, तो इसके उपयोग एवं संचार डोमेन की संख्या में तेजी से कमी आती है, और इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करना बंद कर दिया जाता है। अर्थात कोई नया वक्ता या भाषा का नया उत्तराधिकारी, वयस्क या बच्चे नहीं हैं।" यूनेस्को की एटलस ऑफ द वर्ल्ड लैंग्वेज इन डेंजर (2010), में 2500 भाषाओं को खतरे के पांच स्तरों में वर्गीकृत करती है: असुरक्षित, निश्चित रूप से लुप्तप्राय, गंभीर रूप से लुप्तप्राय, लुप्तप्राय और विलुप्त। पिछली तीन पीढ़ियों में दुनिया भर में 200 से अधिक भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं। यूनेस्को ने आगे उल्लेख किया है कि भाषा संकट एशिया के उत्तरी भाग से लेकर अफ्रीका और लैटिन अमेरिका तक व्यापक रूप से फैली हुई घटना है।

विलुप्तावस्था की ओर भाषाएँ

लुप्तप्राय भाषाओं की पहचान करने के लिए मुख्य रूप से तीन मानदंड हैं: वर्तमान में रहने वाले वक्ताओं की संख्या, देशी और/या धाराप्रवाह बोलने वालों की औसत आयु, और भाषा के अधिग्रहण के साथ प्रवाह प्राप्त करने वाली सबसे युवा पीढ़ी का प्रतिशत कम होता जा रहा है(क्रॉस, 1992)। उन्होंने आगे उन भाषाओं को सुरक्षित बताया जो बच्चे 100 वर्षों में उन्हें बोल रहे हों; और खतरा तब उत्पन्न होता है जब बच्चे के भविष्य में बोलने के अनुपात में कमी आए (लगभग 60-80% भाषाएँ इस श्रेणी में आती हैं) और भाषा लुप्तता

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

वह है यदि बच्चे अब उन्हें नहीं बोल रहे हैं। भाषा के प्रयोग से संबंधित सांख्यिकीय आंकड़े भाषा संकट की समस्याओं की सीमा को स्पष्ट कर सकते हैं। एथनोलॉग (2009) के अनुसार, दुनिया के लगभग 97% लोग दुनिया की लगभग 4% भाषाएँ बोलते हैं; और इसके विपरीत, विश्व की लगभग 96% भाषाएँ विश्व के लगभग 3% लोगों द्वारा बोली जाती हैं। विश्व की लगभग 7000 भाषाओं में से लगभग 85% विश्व के केवल 22 देशों में बोली जाती हैं। ग्रीष्मकालीन संस्थानों के प्रकाशन से पता चलता है कि दुनिया की 20% भाषाएं विलुप्त होने की कगार पर हैं। ग्रीष्मकालीन भाषाविज्ञान संस्थान (एसआईएल) के अनुसार या एथनोलॉग (2009), का मानना है कि हम गणना कर सकते हैं कि दुनिया की 90% आबादी 100 सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली भाषाएं बोलती है। इसका मतलब है कि पृथ्वी पर लगभग 10% लोगों द्वारा बोली जाने वाली कम से कम 6000 भाषाएँ हैं। इन आंकड़ों और अन्य सूचनाओं से संकेत मिलता है कि दुनिया की 90% भाषाएँ संकटग्रस्त स्थिति में हैं और विलुप्त होने की समस्या का सामना कर रही हैं।

भाषा के खतरे का सैद्धांतिक स्वरूप

जब कुछ भाषा विलुप्त हो जाती है, तो सवाल यह है: क्या यह भाषा विलुप्ति के परिणामस्वरूप होता है या हम भाषा की हत्या या भाषा परिवर्तन के बारे में बात कर रहे हैं? भाषा के लुप्त (खतरे) को समझाने के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन प्रतिमान हैं:-

1. भाषा लुप्त प्रतिमान यह मानता है कि प्रकृति में रहने वाली हर चीज का जीवन काल होता है, सब कुछ जल सकता है, खिल सकता है, मुरझा सकता है, अगले उम्मीदवार द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है तो भाषा क्यों नहीं प्रतिस्थापित की जा सकती है? भाषा की स्थितियों में प्रमुख भाषा में क्रमिक बदलाव के कारण भाषा की हानि होती है (कैंपबेल, 1994) । ऐसी स्थितियों में द्विभाषावाद का एक मध्यवर्ती चरण शामिल होता है जिसमें अधीनस्थ भाषा को समान रूप से घटते संदर्भों में बोलने वालों की घटती संख्या द्वारा नियोजित किया जाता है; और यह तब तक होता रहता है जब तक कि अंततः पूरी तरह से भाषा गायब ना हो जाय, भाषा के खत्म होने की प्रक्रिया का अंतिम चरण भाषा लुप्ति का है।
2. भाषाई संहार प्रतिमान यह दावा करता है कि कम से कम आज अधिकांश भाषाएं प्राकृतिक मौत नहीं मरती हैं। इस प्रकार, इसके विपरीत, भाषाओं की मौत (अंत) का कारण उस क्षेत्र विशेष या सरकार विशेष द्वारा योजनाओं को प्रसारित करने वाले एजेंट हैं। उदारवादी विचारधारा में, ऊपर वर्णित, भाषाओं को खत्म करने के सचेत इरादे से केवल एक सक्रिय एजेंट भाषाई हत्या का कारण होगा और अन्य भाषा लुप्ति के क्षेत्र में आ जाएंगे। कंगास (2000) का मानना है कि भाषाई हत्या के एजेंट सक्रिय या निष्क्रिय हो सकते हैं किन्तु वर्तमान में शिक्षा प्रदान करने के उपरांत जिन नौकरी पेशे का लोभ दिखाया जाता है वहाँ पर मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा का औचित्य खतम सा होता है जिसकी परिणति यह होती है कि लोग अपनी भाषा को छोड़कर प्रचलित भाषा को अपनाने में लग जाते हैं।
3. भाषा बदलाव का प्रतिमान है जिसे पहली बार फिशमैन (1991) द्वारा वर्णित किया गया था और यह मानता है कि भाषा बदलाव प्रतिमान को समुदाय द्वारा पूरे वातावरण में बदलती परिस्थितियों की प्रतिक्रिया के रूप में एक स्वैच्छिक पसंद के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन कुछ सवाल हैं: क्या यह बदलाव स्वैच्छिक था या यह जबरन किया गया था? क्या जो लोग स्थानांतरित हो गए हैं, उन्हें अपनी भाषा बोलने की स्वतन्त्रता थी और विकल्प मौजूद था जबकि परिवर्तित हुए स्थान पर जीवन-यापन हेतु अपनाए गए सामान्य व्यवसाय के लिए नयी भाषा को अपनाया जाना एक परोक्ष दबाव था? क्या ऐसी स्थिति में जहां कोई विकल्प नहीं है, भाषा के त्याग को स्वैच्छिक करार दिया जा सकता है? पहले, लोगों की आजीविका के साधन, शारीरिक और मानसिक संस्कृति को जानबूझकर नष्ट किए जाते थे, लोगों को मजबूर करने के लिए, जहां एक ओर उनकी भाषाओं और दुनिया के विचारों को जबरन बदल दिया गया था, वहीं यह कहना कि भाषा स्वैच्छिक रही है इसमें कितनी सत्यता हो सकती है इस पर विचार करना पड़ेगा। भाषा संकट को दृष्टिगत रखये हुए फिशमैन (1991) ने रिवर्सिंग लैंग्वेज शिफ्ट

(आरएलएस) नामक एक सिद्धांत विकसित किया, जिसे भाषाई अल्पसंख्यकों के अपनी भाषा को संरक्षित करने के प्रयासों का एक अग्रणी अध्ययन माना जाता है।

दुनिया के संदर्भ में भाषा को खतरा

1990 के दशक से भाषा पर बहुत कुछ लिखा गया है, खासकर क्रॉस (1992) के बाद से। बाद में क्रिस्टल (2000), डिक्सन (1998), ग्रेनोबल एंड व्हेली (1998), हेगेज (2000), नेटटल एंड रोमेन (2000) की पुस्तकों के साथ-साथ कैंटोनी (1997) जैसे अधिक क्षेत्रीय रूप से केंद्रित प्रकाशनों द्वारा भाषा साहित्य को संवर्धित करने का प्रास किया गया। ब्रेनज़िंगर, (1999), रेहनेर एट अल (1999) तथा मुफवेन (2002) ने मुख्य रूप से इस तथ्य पर खेद व्यक्त किया है कि भाषाई विविधता नाटकीय गति से अपना वर्चस्व खो रही है और कभी-कभी यह तर्क देती है कि इन भाषाओं के मूल वक्ता अपनी सांस्कृतिक विरासत को खो रहे हैं।

एथनोलॉग, वर्तमान समय का सबसे बड़ा सर्वेक्षण है, जिसने पहली बार विश्वव्यापी समीक्षा का प्रयास 1974 में किया, इसके पहले संस्करण में 5,687 भाषाएँ थीं। इसी तरह, एथनोलॉग (1996) के तेरहवें संस्करण में 6,703 भाषा शीर्षक हैं और लगभग 6,300 जीवित भाषाओं को इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ लिंग्विस्टिक्स (1992) में वर्गीकृत किया गया है। वर्तमान में एथनोलोग के 25वें संकरण 2022 में कुल 7151 भाषाएँ पायी गयी हैं। विश्व भाषाओं के एटलस के सूचकांक में 7151 नाम सूचीबद्ध हैं। इन दिनों सबसे अधिक बार सुनाई देने वाला ऑफ-द-कफ आंकड़ा 7,000 है, जिसमें कभी-कभी नीचे, कभी-कभी ऊपर होता है। क्रिस्टल (2000) ने उल्लेख किया कि दुनिया की लगभग 96% भाषाएँ केवल 4% आबादी द्वारा बोली जाती हैं। लगभग 500 भाषाओं में 100 से कम वक्ता हैं।

मानवता और मानव संस्कृति के नुकसान के लिए भाषा संकट एक महत्वपूर्ण मामला है। जब लोग मरते हैं, तो वे दुनिया में अपनी उपस्थिति के निशान छोड़ते हैं, अपने निवास स्थान, दफन टीले और कलाकृतियों के रूप में पहचान और उनकी पुरातत्व को छोड़ के जाते हैं। लेकिन बोली जाने वाली भाषा कोई पुरातत्व नहीं छोड़ती है, जब कोई भाषा मर जाती है जिसे कभी प्रलेखित नहीं किया गया है, तो ऐसा लगता है कि यह कभी था ही नहीं (क्रिस्टल: 2005)। भाषा संकट एक सतत प्रक्रिया है जो भाषा द्वारा उपयोग की जाने वाली शक्ति, अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी पर निर्भर करती है।

भाषा संकट के चरणों या स्तरों से संबंधित विभिन्न अवधारणाएँ

किंकेड (1991) के अनुसार, भाषा के खतरे के पाँच चरण हैं: व्यवहार्य भाषा, व्यवहार्य लेकिन छोटी, लुप्तप्राय भाषा, लगभग विलुप्त भाषाएँ और विलुप्त। यूनेस्को (2010) और स्कुटनाब-कांगस (2000) ने भाषा के खतरे के चार चरणों का उल्लेख किया और क्रॉस (1992) ने केवल तीन चरणों संकटग्रस्त भाषाएं, लुप्तप्राय भाषाएं और सुरक्षित भाषाओं का वर्णन किया। इन चरणो को ठीक वैसे से वर्गीकृत किया गया है जैसे एक मात्रात्मक शोधकर्ता उपलब्धि परीक्षण के लिए लिकर्ट मापनी का प्रयोग करता है। इन स्तरों या चरणों से हम कह सकते हैं कि भाषा के खतरे को समझने के लिए कई योजनाएं प्रस्तावित की गई हैं, उनमें से सबसे व्यापक यूनेस्को की भाषा जीवन शक्ति और खतरे की रूपरेखा है, जिसका उल्लेख यूनेस्को की रेड बुक श्रेणियों में किया गया है।

दक्षिण एशिया में बड़ा हिमालयी क्षेत्र, जो पश्चिम में अफगानिस्तान से पूर्व में म्यांमार तक 3,500 किमी तक फैला हुआ है, 150 मिलियन से अधिक लोगों का भरण-पोषण करता है और यह महान भाषाई विविधता और एशिया की सबसे लुप्तप्राय भाषाओं में से कई का घर है। राजनीतिक रूप से, दक्षिण एशिया क्षेत्र आठ स्वतंत्र देशों में विभाजित है: भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, अफगानिस्तान और मालदीव जो भाषाई रूप से बहुत विविध क्षेत्र हैं और 500 भाषाएँ हैं। दक्षिण एशिया भाषाई विविधता में सबसे समृद्ध क्षेत्र है। पूरे क्षेत्र में वर्णानुक्रम में चलते हुए, भारत में 415, अफगानिस्तान में 47 जीवित भाषाएं हैं, बांग्लादेश में 39, भूटान में 24, चीन में 235, म्यांमार में 108, नेपाल में 123 और पाकिस्तान में 72 (ट्यूरिन, 2007) हैं। दक्षिण एशिया की प्रमुख भाषाएँ पाँच परिवारों से संबंधित हैं: इंडो-यूरोपियन (इंडो-आर्यन, ईरानी और नूरिस्तानी), द्रविड़ियन, ऑस्ट्रो-एशियाटिक (मुंडा और खासी), तिब्बती-बर्मन, और अलग-अलग भाषाएँ (बुरुशास्की, कुसुंडा और नहाली) ।

अधिकांश दक्षिण एशियाई लोग इंडो-यूरोपीय भाषा बोलते हैं जो दक्षिण एशिया की 80% आबादी द्वारा बोली जाती है और पूरे उत्तर और दक्षिण क्षेत्र के केंद्र में फैली हुई है। उनके बाद द्रविड़ भाषाएँ हैं, जो 18% आबादी द्वारा बोली जाती हैं, मुख्य रूप से भारत के चार दक्षिणी राज्यों (कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु) और श्रीलंका के उत्तर में। भाषाई दृष्टि से, इस प्रश्न के आधार पर भाषा के ऐतिहासिक और क्षेत्रीय अध्ययन के बीच का अंतर है। जबकि उन्नीसवीं सदी के भाषाशास्त्र, और बाद में बीसवीं सदी के ऐतिहासिक भाषाविज्ञान, भाषा और इसकी विविधता के सवालों का अर्थ निकालने के लिए आए, वंश के आनुवंशिक मॉडल पर जो कुछ मूल या चरण के बिना भिन्नता ग्रहण करते थे, ऐसे विचारों के लिए एक निरंतर समस्या थी और है (ट्रुटमैन 1997)। मरे एमेन्यू (1956) ने इस मुद्दे को इस रूप में बताया भारत को "भाषाई क्षेत्र" के रूप में परिभाषित करने के लिए भाषाई क्षेत्र एक भौगोलिक क्षेत्र है। संपर्क द्वारा बनाए गए आनुवंशिक समूहों में साझा भाषाई विशेषताओं द्वारा परिभाषित क्षेत्र ही भाषा की विविधता को दर्शाते हैं।

भारत में गोंड आदिवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा भी लुप्त होने की कगार पर जिसके लिए आए दिन विभिन्न कार्यक्रम और योजनाएँ चलायी जाती रही है। गोंड आदिवासियों के एक नृजातीय अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि गोंड भाषा की समझ बच्चों में नहीं है। बच्चे एवं अभिभावक वर्तमान समय के समाज के अनुरूप चलने के लिए हिन्दी अथवा अँग्रेजी को भाषा के रूप में वरीयता देते हैं। किए गए नृजाति अध्ययन का सार इस प्रकार है।

जीवन-यापन के लिये अंग्रेजी आना आवश्यक है किंतु वर्तमान युग के अंधानुकरण में भारतीयों में अंग्रेजी के लिए विशेष महत्व हो गया है। हालांकि फ्रांस, चीन, जर्मनी तथा अनेक देश ऐसे हैं जहां आज भी उनकी राष्ट्रीय भाषा बोली जाती है। अँग्रेजी को एक भाषा के तौर पर सीखने में कोई खास असुविधा नहीं होती लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में यह आज भी एक दुष्कर कार्य लगता है। बच्चों को अंग्रेजी शब्दकोश पढ़ाया जाता है अंग्रेजी शिक्षण के लिए शिक्षिका से एक रोज बात करने के दौरान उन्होंने बताया कि *“यह लोग अगर अंग्रेजी सीखेंगे तो इनमें हीन भावना नहीं रह जाएगी इनका आत्मविश्वास बढ़ेगा कल को यह लोग किसी दूसरे विद्यालय में जाएंगे तो वहां अगर कोई पढ़ाएगा तो समझेंगे इसीलिए इन लोगों को रोज कुछ ना कुछ अंग्रेजी के शब्द बोलने के लिए कहती हूँ”*।

अँग्रेजी शिक्षण के दौरान बच्चे कुछ-कुछ शब्दों का उच्चारण नहीं कर पा रहे थे ऐसे में शिक्षक द्वारा उच्चारण किए जाने पर विद्यार्थियों द्वारा उनका अनुकरण किया जाता है कई बार शब्दों को बोलने के दौरान उसके अर्थ को भी बताती या उस शब्द से संबंधित कोई कहानी सुनाती जिससे वास्तविक जीवन से संबंध स्थापित कर वे सीख सकें। बच्चों में अंग्रेजी सीखने की ललक है, एक घटना है 1 अक्टूबर 2019 की तीन-चार बच्चे मेरे पास आए (वैसे तो यह मुझे ‘अंकल’ कह कर संबोधित करते हैं पर विद्यालय में ‘सर’ कहते हैं) उन्होने कहा कि सर हमें अंग्रेजी बोलना सिखाइए मैंने सिखाना स्वीकार किया और दिन की कक्षा में बच्चों को सामान्य परिचय से संबंधित अंग्रेजी बोलना सिखाने लगा। इसके लिए पहले मैं स्वयं अंग्रेजी में बोलता उसका अर्थ बताता था फिर बच्चों से बोलने के लिए कहता कुछ ही दिनों में बच्चे अंग्रेजी में अपना परिचय देना सीख गए। विद्यार्थियों में अंग्रेजी के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने के लिए व अंग्रेजी को सरल व रुचिकर बनाने के लिए अंग्रेजी में कार्टून पिक्चर को अनुवाद किया जाता है फिर अंग्रेजी व हिंदी दोनों में समझाया जाता है। बच्चों को कार्टून समझा लेने के बाद उनसे कार्टून के उन पात्रों का अभिनय करने के लिए कहा जाता है। बच्चे बड़ी खुशी से यह कार्य करते हैं और सीखते हैं जैसे एक छात्र ने ड्यूक का रोल किया और एक छात्रा ने चूजे का। बच्चों को क्या बोलना है यह उन्हें पहले पढ़ाया जा चुका रहता है और संबंधित कॉमिक्स भी पढ़ने के लिए दी गई रहती है बच्चों को अंग्रेजी सिखाने के लिए उन्हें आपस में मराठी में बात करने के लिए कहा जाता है फिर अंग्रेजी में उसी बात को करने के लिए कहा जाता है, बात करने में असुविधा होने पर उनके वार्तालाप को अंग्रेजी में लिखवा कर याद करने के लिए कहा जाता है। इस बातचीत में रोजाना बोलने वाले वाक्यों का ही ज्यादातर प्रयोग होता है। बच्चों से बोलने के अलावा हर रोज अंग्रेजी के चार-पांच वाक्य लिखने के लिए भी कहा जाता है। इन सभी क्रियाकलापों का यह लाभ हुआ कि बच्चे अंग्रेजी बोलना और लिखना सीख गए। शब्दकोश याद करवाने की वजह से उनके शब्दकोश और आत्मविश्वास में काफी वृद्धि देखी जा सकती है जिससे बच्चों के अंदर पनप रही

हीन भावना भी दूर हो गई। बच्चों को विषयवस्तु ठीक से समझ में आ जाए इसके लिए उन्हें रोज-रोज उसका अभ्यास करवाया जाता है। भाषा की सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। **वायगोत्सकी** के अनुसार बालक के विकास के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण उपकरण का कार्य करती है।

भाषा का ज्ञान कराने का उद्देश्य सिर्फ इतना है कि बच्चे गांव से बाहर जाने के बाद किसी भी प्रकार की कठिनाई का अनुभव ना करें इसलिए उनमें भाषा का विकास होना आवश्यक है। भाषा के विकास से संबंधित एक शोध में प्रीतम (2019) ने बताया है कि शिक्षकों द्वारा बच्चों पर हिंदी भाषा में समझ विकसित करने को कहा जाता है जिससे बच्चों को उच्चारण संबंधी समस्या होती है। शिक्षकों के द्वारा सिखाने की प्रक्रिया में रुचि संबंधी शिक्षण विधियों का प्रयोग आमतौर पर नहीं किया जाता है जिस कारण कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया नीरस हो जाती है और भाषाई कठिनाई की वजह से बच्चे विषय को नहीं समझ पाते है। किंतु वाघोली के जिला परिषदीय विद्यालय में बच्चों को भाषाई कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है क्योंकि एक तो वहां के शिक्षक वहां की क्षेत्रीय भाषा जानते हैं और दूसरा हिंदी भाषा का दबाव न डालकर उनमें अंग्रेजी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न की जा रही है। आदिवासी बच्चों के लिए हिंदी और अंग्रेजी समान रूप से विदेशी भाषाएं ही हैं ऐसे में अंग्रेजी की उपयोगिता को ध्यान में रखकर अंग्रेजी को सिखाया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु 2.8 में भाषा को ही ध्यान में रखकर वर्णन किया गया है जिसमें कहा गया है कि सभी भारतीय और स्थानीय भाषाओ में दिलचस्प और प्रेरणादायक बाल साहित्य और सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए स्कूल में पुस्तकों की व्यवस्था की जाएगी। भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बिन्दु 4.11 में भी कहा गया है कि जहां तक संभव हो कम से कम ग्रेड पाँच तक लेकिन बेहतर यह होगा कि ग्रेड 8 तक और उससे आगे तक भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा, मातृभाषा या स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा होगी। इस स्थानीय भाषा को जहां भी संभव हो, एक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता रहेगा। गोंड आदिवासियों द्वारा गोंडी व्याकरण को भी कक्षा 5 तक की शिक्षा के लिए आवश्यक करने का प्रस्ताव रखा जाता है जिसका नई शिक्षा नीति के माध्यम से पूरा होने के आसार दिखते हैं। भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बिन्दु 4.12 में कहा गया है कि केंद्र और राज्य दोनों सरकारों की ओर से देश भर की सभी क्षेत्रीय भाषाओं और विशेष रूप से संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित सभी भाषाओं में बड़ी संख्या में भाषा शिक्षकों में निवेश का एक बड़ा प्रयास होगा। राज्य विशेष रूप से भारत के विभिन्न क्षेत्रों के राज्य अपने-अपने राज्य में त्रिभाषा फार्मूला को अपनाने के लिए और साथ ही देश भर में भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करने के लिए बड़ी संख्या में शिक्षकों को नियुक्त करने के लिए आपस में द्विपक्षीय समझौते कर सकते हैं। विभिन्न भाषाओं को सीखने के लिए और भाषा शिक्षण को लोकप्रिय बनाने के लिए तकनीक का बेहद उपयोग किया जाएगा, भाषा की उपयोगिता और भाषा की उपादेयता को ध्यान में रखकर ही शिक्षा नीति में भी भाषा पर वृहद वर्णन देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

भाषा जहां एक ओर भावना व्यक्त करने का माध्यम है वहीं संस्कृति के हस्तांतरण के लिए भी एक आवश्यक अंग के रूप में कार्य करती है किन्तु आधुनिकीकरण की इस अंधी दौड़ में और पेट की चिंता से परेशान गरीब जन-मानस जीवन-यापन के लिए राज्य अथवा क्षेत्र की प्रचलित भाषा का सहारा लेते हैं जिससे वे रोजगार पा सकें। सामाजिक गतिशीलता और शहरीकरण की दौड़ मातृ भाषा के त्याग का एक प्रमुख कारण है। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत की गयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस समस्या को ध्यान में रखा गया है जिसके लिए प्रत्येक संस्कृति से जुड़े साहित्यों का अनुवाद करने की सिफ़ारिश की गयी है। भाषा संरक्षण के लिए आवश्यक है कि उस भाषा में साहित्य का लेखन किया जाय। बहु-भाषिकता भाषा संरक्षण का न सिर्फ एक बेहतर माध्यम हो सकती है बल्कि किसी एक साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद होने से सभ्यताओं के साहकार के साथ ही संस्कृतियों के सम्मिलन और विश्व बंधुत्व की भावना को मूर्त रूप दिया जा सकता है। साहित्य किसी भी समाज का दर्पण होता है और साहित्यों के बहु-भाषिक अनुवाद से विभिन्न समाज एवं संस्कृतियों से परिचय होगा जिसका परिणति प्रेम, सौहार्द, विश्व-बंधुत्व के रूप में होगी। यही वह माध्यम है जिससे मुख्य धारा के साथ ही हांसीए पर रह रहे लोगों की अंतर्दशा से भी परिचित हुआ जा सकता है तथा

उनकी उन्नति के लिए वैश्विक पटल पर समाज के अन्य लोगों के समान ही समान का अधिकारी बनाया जा सकता है।

संदर्भ (REFERENCES)

1. अग्निहोत्री, (2015) "संविधान सभा भाषा पर बहस" आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक 50 (8): Pp- 47-56
2. अन्नामलाई, (2012) आधुनिक तमिल के सामाजिक आयाम, चेन्नई:
3. आशेर, (2008) "ऐतिहासिक संदर्भ में भाषा" दक्षिण एशिया में भाषा में, इडिटेड: काचरु एवं एस गिरिधर, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, कैम्ब्रिज
4. ब्रेनज़िंगर, एम, और तजेर्ड डी॰ जी॰ (2004-2008), लुप्तप्राय भाषाओं और भाषा रखरखाव का दस्तावेजीकरण।
5. देवी, जी.एन. (2014) द बीइंग ऑफ भाषा: ए जनरल इंट्रोडक्शन। पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया, खंड 1. हैदराबाद, भारत: ओरिएंट ब्लैकस्वान
6. देवी, जी.एन. (2018) "गेटिंग द लैड्ग्वेज काउंट राइट" द हिंदू, 18 जुलाई।
a. https://www.thehindu.com/opinion/lead/getting-the-languagecountright/article24454570.ece
7. फिशमैन, जे.ए. (1991), रिवर्स लैंग्वेज शिफ्ट, क्लेवेनडन: बहुभाषी मामले
8. गुटमैन, ए. और अवनज़ती, बी. (2013), दक्षिण एशिया की भाषाएँ http://www.languagesgulper.com/eng/India.htmlकैंपबेल, बी (1994) *द हैवी लोड्स ऑफ तमांग आईडेंटिटी*, नेपाल में राष्ट्रवाद और जातीयता, गेलनर, जारंका और वेल्पटॉम द्वारा संपादित, वज्र प्रकाशन, काठमांडू, नेपाल।
9. लुप्तप्राय भाषाओं पर यूनेस्को तदर्थ विशेषज्ञ समूह (2003), *भाषा जीवन शक्ति और खतरे*, यूनेस्को पर अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ बैठक में प्रस्तुत दस्तावेज : लुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा कार्यक्रम, पेरिस http://www.unesco.org/culture/ich/doc/src/00120-EN.pdf
10. रामास्वामी, (1997) फैशन ऑफ टंग : तमिल भारत में भाषा भक्ति, 1891-1970, बर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
11. यूनेस्को इनसाइक्लोपीडिया ऑफ लाइफ सपोर्ट सिस्टम (ई॰ओ॰एल॰एस॰एस॰)
12. यूनेस्को (2010), लुप्तप्राय भाषाओं पर संयुक्त राष्ट्र एटलस, यूनेस्को पेरिस
13. यूनेस्को (2011) देश द्वारा लुप्तप्राय भाषाओं की संख्या। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, सांख्यिकी के लिए वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन संस्थान, पेरिस, फ्रांस
http://www.unesco.org/culture/languages-atlas/index.php?hl=hi&page=atlasmap
14. वुडबरी, ए.सी. (2012) एक लुप्तप्राय भाषा क्या है? अमेरिका का भाषाई समाज।
http://www.linguistlist.org/Extracted on 1/5/2013